विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

अर्थव्यवस्था के प्रबंधन की नहीं उसके दर्शन पर सोचने की जरूरत

किसी भी देश के कोष प्रबंधन के लिए अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जाता है। अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के आधार पर ही राजनीतिक विचारधाराएं बनती रही हैं। इसमें कोई संशय नहीं कि अर्थव्यवस्था सामाजिक जीवन व्यवस्था को नियंत्रित करती है। कोई भी राजनैतिक विचारधारा हो वह मूल में सबकी समानता की बात ही करती है। वह सबके लिए न्याय की बात करती है और शोषण का प्रतिकार करती है। इसीलिए सभी राजनैतिक विचारधाराओं में पूंजी पर नियंत्रण की बात होती है। कार्ल मार्क्स ने यह साबित करने की कोशिश की कि उत्पाद के साधनों पर नियंत्रण से ही पूंजी पर कब्जा किया जाता है। उनके विश्लेषण के आधार पर साम्यवाद खड़ा हुआ जिसने करीब आधी दुनिया में हिंसक लड़ाइयां लड़ कर सत्ता हासिल की ताकि उत्पादन के साधनों और पूंजी पर सर्वहारा वर्ग का नियंत्रण हो और निजी हाथों से पूंजी का हस्तांतरण उनके द्वारा नियंत्रित सार्वजनिक संस्थाओं को हो। दूसरी तरफ पूंजीवादी व्यवस्था में पूंजी का नियंत्रण बाज़ार के हाथ में होने और लोकतान्त्रिक शासन की भूमिका एक अंपायर जैसी होने की होती है। सनातन भारतीय अर्थशास्त्र पश्चिम के पूंजीवादी अर्थशास्त्र से मौलिक रूप से भिन्न रहा है। हालांकि वह साम्यवाद के निकट भी नहीं है। न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे ने कहा था कि पाश्चात्य अर्थशास्त्र के सिद्धान्त भारतीय परिस्थितियों में लेश मात्र भी लागू नहीं किये जा सकते। मगर तब से अब तक गंगा में न जाने कितना पानी बह गया है। आज भारतीय परिस्थितियां वैसी नहीं हैं जैसी उन्नीसवीं या बीसवीं सदी में थीं। अंग्रेजों ने हिंदुस्तानियों को अपनी शिक्षा प्रणाली और अपनी भाषा दी जिसके नजरिये से नई भारतीय पीढ़ियों ने न केवल बाहर की दुनिया को देखा और समझा बल्कि अपने आप को भी उनके नज़रिये से देखा और समझा। इसे बहुतों ने पश्चिमीकरण या पाश्चात्यकरण कहा। इसके चलते भारतीय भूभाग,जिसमें लगभग पूरा पश्चिम एशिया शामिल है, में लोगों की जीवन शैली और व्यवहार बदले और पश्चिमी पूंजीवाद के सिद्धान्त यहां लागू होने की परिस्थितियां बनी।

दिलचस्प बात यह भी रही कि अंग्रेजी के जरिये जब हिंदुस्तान के लोगों ने दुनिया को देखा-समझा तो उसे पूंजीवाद के साथ-साथ साम्यवाद भी समझ में आया। आज़ादी के बाद देशी सरकार के सामने 532 सामंती राज्यों में बिखरे हिंदुस्तान को सहेजने की विराट चुनौती थी। एक सशक्त केंद्रीय शक्ति के तहत ही नया आज़ाद देश मूर्त रूप ले सकता था। तब देश के तत्कालीन नेतृत्व ने तय किया कि यह केंद्रीय शक्ति लोकतान्त्रिक होगी और चुने हुए प्रतिनिधियों से बनी होगी। आज़ादी के 75 वर्षों के बाद आज बाज़ार आधारित अर्थव्यवस्था हमारी सामाजिक संरचना और परिवार प्रणाली में हस्तक्षेप करती नजर आ रही है। आज पूरे विश्व में न तो परंपरागत साम्यवाद बचा है और न ही क्लासिक पूंजीवाद। कह सकते हैं कि विश्व की अर्थव्यवस्थाओं का यह संक्रांतिकाल है। आजाद भारत के अर्थशास्त्रियों तथा नीति निर्माताओं ने जब नये देश की व्यवस्थाएं बनाई तब उन्होंने दुनिया भर को देखा और सभी से कुछ लेते हुए एक मिली-जुली अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जो एक हद तक अब भी बनी हुई है। संक्रातिकाल के आर्थिक परिवर्तनों से जहां भारतीय समाज में नयापन नजर आने लगा है वहीं परंपरागत रूढ़ियां अब भी भी उसमें जमी हुई हैं खासकर पुराने सामंती व्यवहार जो नये रूपों में हमारे आचरण में बने हुए हैं। अब उदारवाद का समय है। एक है आर्थिक उदारवादजो खुली प्रतियोगिता और मुक्त बाज़ार पर ज़ोर देता हैऔर अर्थव्यवस्था में सरकार के कम से कम दख़ल की वकालत करता है। दूसरा है राजनीतिक उदारवाद जो आर्थिक प्रगति में विश्वास, मानव जाति की ज़रूरी अच्छाई और व्यक्ति की स्वायत्तता के साथ राजनीतिक और नागरिक आज़ादी की सुरक्षा पर जोर देता है। तीसरा है सामाजिक उदारवाद, जो अल्पसंख्यक समूहों की सुरक्षा, एलजीबीटी जैसे मुद्दों और समलैंगिक शादियों को बढ़ावा देने से जुड़ा है। वैसे कुछ लोग लिबरल यानी उदारवादी शब्द का इस्तेमाल एक गाली के तौर पर भी करते हैं, हालांकि इसके भी मायने अलग-अलग हैं। आजकल यूरोप और अमेरिका से होता हुआ क्रोनी कैपिटेलिज्म अथवा 'याराना पूंजीवाद' भी भारत में अपनी जड़ें जमा रहा है। इस 'याराना पूंजीवाद' में राजनेता, पूंजीपति और सरकारी अधिकारी मिलकर अपने-अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति करते हैं। इस 'याराना पूंजीवाद' की विशेषता यह है कि इसमें राजनेता और उनके आर्थिक सलाहकार चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं। इसमें आंकड़ों की जादूगरी से ऐसा भ्रम फैला दिया जाता है मानो सब कुछ हरा ही हरा है। जहां जैसी अनुकूलता लगती है राज व्यवस्था चलाने वाले कहीं कुल संख्या का हवाला देते हैं तो कहीं कुल संख्या की बात न करके प्रतिशत में बात करते हैं। कुल उत्पादन, कुल राष्ट्रीय आय और स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों के कीमतों में चढ़ाव अर्थव्यवस्था के सकारात्मक गुणों के रूप में स्थापित किए जाते हैं। किन्तु ऐसा मानने वाले भी कम नहीं है कि पूंजीवाद के कारण दुनिया-भर में बेरोजगारी बढ़ी है और श्रम की महत्ता कम हुई है। उसने भारतीय समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार को कमजोर किया है, घरेलू हिंसा को बढ़ाया है तथा सामाजिक रिश्तों को बड़े पैमाने पर तोड़ने का काम किया है।

मुख्यमंत्री ने भी कुछ समय पहले कहा कि निर्वाचित लोग जो शासन में बैठ सरकार चला रहे है वास्तव में ट्रस्टी हैं। उनका यह कथन महात्मा गांधी की उस सीख से प्रेरित था जिसे उन्होंने सेठ-साहूकारों को दी थी कि वे अपने को अपने धन का मालिक नहीं बल्कि अपने को उसका ट्रस्टी समझें और उसी प्रकार व्यवहार करते हुए अपने धन को जन कल्याण पर लगाएं।

ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक ही है कि पश्चिम और पूर्व की संस्कृतियों के संपर्क के दौरान भारतीय मेधा कहां गयी? पुराने जमाने में हिंदुस्तान में अर्थ प्रबंधन कैसे होता था, इसका अध्ययन बड़ा दिलचस्प हो सकता है। इस पर इतिहास के नज़रिये से तो काम हुआ है किन्तु दुर्भाग्य से अर्थशास्त्र के अकादमिक नज़रिये से किसी ने इसका गंभीर अध्ययन नहीं हुआ। माना जाता है कि ग़ुलामी के लंबे दौर में भारतीय मेधा कुंद हो गयी। हालांकि इस भू भाग के लोगों ने अपनी सुरक्षा के लिए, अपनी अस्मिता बचाए रखने के लिए, अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवित रखने के प्रयत्न जरूर किये जो हमारे सर्वग्राही गुण पर आधारित थी। इसी से भारतीय सभ्यता लूट के इरादे से होने वाले आक्रमणों के झंझावातों को झेल सकी। बहुतों को अचंभा होता है कि भारतीय नीति निर्धारकों ने अर्थव्यवस्था के विदेशी मॉडल तो अपनाए मगर कभी स्वदेशी मॉडल का प्रयोग करके नहीं देखा। ऐसे मॉडल की भावभूमि महात्मा गांधी ने तैयार की भी थी। किन्तु दुर्भाग्य से राजनीतिक या अकादमिक स्तर पर उस पर कभी गंभीरता से काम नहीं किया गया। गांधीजी के आर्थिक सिद्धांतों में उनका 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत सर्वोपरि है। गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में 1903 में ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। गांधीजी ने इसका आधार 'ईशोपनिषद्' के प्रथम श्लोक को माना था जिसका अर्थ है, इस जगत में जो कुछ भी जीवन है, वह सब ईश्वर का बनाया हुआ है इसलिए ईश्वर के नाम से त्याग करके तू यथाप्राप्त भोग किया कर। किसी के धन की वासना न कर। उनके अनुसार जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक संपत्ति एकत्रित करता है, उसे केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करके पर्याप्त संपत्ति का उपयोग करने का अधिकार है, शेष संपत्ति का प्रबंध उसे एक ट्रस्टी की हैसियत से, उसे धरोहर समझकर, समाज कल्याण के लिए करना चाहिए। ट्रस्टीशिप सिद्धांत में देश की समस्याओं का समाधान है, इसे राममनोहर लोहिया ने गहराई से समझा। उन्होंने इसे कानूनी ढांचे में विरूपित करने की भी कोशिश। बाद में तत्कालीन सांसद डॉ. रामजी सिंह ने भी प्रयास किया लेकिन अकादमिक और राजनैतिक तौर पर बात आगे नहीं बढ़ी। महात्मा गांधी ने स्वदेशी, स्वराज और सत्याग्रह की जो अवधारणा दी वह सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों स्तर पर अपनाई जा सकती है और जो आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत विकास की वैकल्पिक अवधारणा का लक्ष्य माना गया है। गांधी ने हमारा ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि उत्पादन का लक्ष्य हमरी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है, न कि उपभोग की कृत्रिम मांगों को पैदा कर उनकी पूर्ति करना है। गांधी जिस 'स्वदेशी' की बात करते थे उसमें न तो प्राकृतिक संसाधनों की अंधा-धुंध बर्बादी संभव है और न पूंजी का कुछ हाथों में सिमटना। इसमें रोजगारविहीन विकास और पारिस्थितिकीय असंतुलन कि उन दो समस्याओं ने निज़ात मिल सकने की राह नज़र आती है।

देश में 1950 में योजना आयोग की स्थापना की गई जिसने पंचवर्षीय योजनाएं बनाने तक अपने को सीमित कर लिया और अर्थव्यवस्था में किसी विकल्प की तरफ नहीं झांका। इस व्यवस्था के रहते हुए भी संसदीय बहुमत वाले शासन ने 1980 के दशक में पूंजीवाद की उदार नीतियों को स्वीकार कर लिया और एक नई अर्थ व्यवस्था का अगाज़ किया। अंत में नए संसदीय बहुमत ने उसकी जगह नीति आयोग बना दिया। परंतु नए बने नीति आयोग ने भी किसी वैकल्पिक स्वदेशी अर्थव्यवस्था की अवधारणा पर अब तह तो कोई विचार नहीं किया है।

राजस्थान के मुख्यमंत्री ने भी कुछ समय पहले कहा कि निर्वाचित लोग जो शासन में बैठ सरकार चला रहे है वास्तव में ट्रस्टी हैं। उनका यह कथन महात्मा गांधी की उस सीख से प्रेरित था जिसे उन्होंने सेठ-साहूकारों को दी थी कि वे अपने को अपने धन का मालिक नहीं बल्कि अपने को उसका ट्रस्टी समझें और उसी प्रकार व्यवहार करते हुए अपने धन को जन कल्याण पर लगाएं। मुख्यमंत्री का कथन सरकारी कोष के सदुपयोग के लिए राजतंत्र चलाने वालों को इंगित था जिसे किसी ने नहीं सुना और शायद खुद मुख्यमंत्री भी भूल गए। राजनेताओं के ऐसे वक्तव्यों के मूल में केवल लोकप्रियता पाना ही होता रहा है, किसी परिवर्तन की चाह नहीं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

जैन धर्म का पर्वराज दशलक्षण धर्म पर्व की शुरुआत

जैन धर्म एक अनादि, अनंत, शाश्वत धर्म है। जैन धर्म की शुरुआत प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान से पूर्व से है।

जैन धर्म के तीन मुख्य त्योहारों में 1) षोडश कारण भावना पूजा - यह पूजा करने से तीर्थंकर प्रकृति का बंधन होता है, 2) अष्टांहिका पर्व पूजा - यह भक्ति का पर्व है, यह वर्ष में तीन बार मनाई जाती है एवं 3) दशलक्षण धर्म पूजा - यह वर्ष में दो बार आता है, लेकिन भाद्रपद में आने वाले इस पर्व का बढ़ा ही महत्व है । आत्मा के दस धर्मों की विशेष आराधना करते है। दस धर्मों का पालन करना साधकों के लिए अनिवार्य है ।

दशलक्षण धर्म पर्व को पर्वराज भी कहा गया है । जैन धर्म में इस त्योहार का महत्वपूर्ण स्थान है।

दिगंबर धर्म में 10 दिन तक चलने वाला यह पर्व इस वर्ष 31 अगस्त, भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी से प्रारंभ होकर 9 सितंबर - अनंत चतुर्दशी तक जारी रहेगा । इसी क्रम में 11 सितंबर को क्षमावाणी पर्व मनाया जायेगा ।

दशलक्षण धर्म पर्व जैसा की नाम से आभाष होता है दस धर्मों की पूजा एवं पालना की जाती है । ये दस धर्म है - 1) उत्तम क्षमा, 2) उत्तम मार्दव, 3) उत्तम आर्जव, 4) उत्तम सोच, 5) उत्तम सत्य, 6) उत्तम संयम, 7) उत्तम तप, 8) उत्तम त्याग, 9) उत्तम आकिंचन एवं 10) उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन कर आत्म शुद्धि की जाती है ।

इन सभी दस धर्म के अंतर्गुण नाम से ही स्वत : स्पष्ट है । ये सभी दस धर्म एक दूसरे के पूरक है। किसी भी एक धर्म की पालना, साधना करने पर शेष सभी धर्म स्वत: आत्मसात हो जाते है एवं साधक के जीवन का अंग बन जाते है ।इन दस दिनो के दौरान धर्मावलंबी जिन अभिषेक, शांतिधारा, पूजा, पाठ यथावत करते है । प्रति दिन नित्य नियम पूजा के साथ क्रमश: दशलक्षण धर्मों के धर्म विशेष की पूजा भी की जाती है ।

भागचंद जैन

दशलक्षण पर्व के दौरान जैन धर्म के मानने वाले व्रत, उपवास रखते है एवं इस अवधि में ऐसा भोजन किया जाता है जो मन और शरीर को नियंत्रण में रख सके। जैन धर्म में अहिंसा और आत्मा की शुद्धि का विशेष महत्व है. श्रावकगण इस समय का सदुपयोग त्याग, तपस्या, आराधना और साधना का मार्ग अपना कर करते हैं । यह पर्व अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करने, आत्मशुद्धि करने एवं कर्मो का क्षय कर मोक्षमार्ग प्रशस्त करने के लिए मनाया जाता है ।

जैन धर्मावलंबी इस पर्व के दौरान धार्मिक ग्रंथों का पाठ करते हैं । पर्व की अवधि में दिया गया दान का भी अपना महत्व है ।

दशलक्षण पर्व में व्यक्ति को अपने द्वारा किए बुरे कर्मों से दूर होने के लिए अवसर मिलता है । ये पर्व जीओ और जीने दो की राह पर चलने की प्रेरणा देता है । इस पर्व में अपने द्वारा की गई गलतियों पर विचार कर क्षमा मांगी जाती है ।

दश लक्षण पर्व आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करता है इसलिए इस दौरान अहिंसा यानी किसी को दुख, कष्ट ना पहुंचाएं, सत्य के मार्ग पर चलें, चोरी ना करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, परिग्रह से दूर रहना, जैन धर्म के सिद्धांतों को रेखांकित करता है ।

श्वेतांबर धर्मावलंबियों द्वारा पर्युषण पर्व 8 दिन तक, इस वर्ष 24 अगस्त से 31 अगस्त तक मनाया जा रहा है ।

भागचंद जैन,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय
जैन बैंकनेरा फोरम, जयपुर।

रक्षासूत्र/ रक्षाबंधन पर्व दो विभिन्न तिथियों पर क्यों मनाया जाता है?

वैदिक काल में जिसे हम रक्षासूत्र कहते थे उसे ही आजकल राखी कहा जाता है ।अब जैसा आप सभी जानते भी होंगे और मानते भी होंगे कि रक्षासूत्र केवल पाँच या सात पतली रंगीन डोरियाँ नहीं बल्कि यह बांधने और बंधवाने वालों के बीच आदान-प्रदान होने वाले शुभ भावनाओं व शुभ संकल्पों को दर्शाता है। इस पर्व के शुरुआत के समय उपलब्धता के आधार पर एक छोटा-सा ऊनी, सूती या रेशमी पीले कपडे के टुकडे में दूर्वा, अक्षत (साबूत चावल), केसर या हल्दी, शुद्ध चंदन एवं कुछ सरसों के साबूत दाने - इन पाँच समानों को मिलाकर छोटे से कपड़े के टुकड़े में बाँध रक्षासूत्र वाले कलावे से जोड़ हाथ पर बाँध देते थे । कालान्तर में यही स्वरूप पहले तो रेशमी फूँदों वाली राखी में बदला और धीरे-धीरे आज जिस रूप में हम सभी देख रहे है अर्थात केवल कच्चे सूत जैसे कलावे, रेशमी धागे से आगे सोने या चाँदी जैसी महंगी वस्तु तक की राखियां उपलब्ध हैं और आज-कल इस राखी वाले व्यवसाय में कई सौ लाखों का वारा-न्यारा हो रहा है ।

अब आपके ध्याननार्थ बताना चाहूंगा यह पर्व दो अलग अलग तिथियों को मनाया जाता है । भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चमी जिसे हम ऋषि पञ्चमी कहते हैं, वाले दिन माहेश्वरी जाति के अलावा गौड़, पारीक, दाधीच, सारस्वत, गुर्जर गौड़, शिखवाल के अलावा खन्डेलवाल माहेश्वरी एवं पुष्करणा हर्ष जाति में बहन भाई को रक्षासूत्र / राखी बांधती है जबकि बाकी सभी जगह, क्योंकि यह पर्व न केवल पूरे भारत में बल्कि नेपाल में भी, श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन जिसे हम श्रावणी-पूर्णिमा कहते हैं, वाले दिन रक्षाबंधन वाले त्यौहार के रूप में मनाया जाता है ।

आप सभी की जानकारी के लिये बता दूं कि माहेश्वरी समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी से अर्थात परम्परागत रुप से ऋषि पञ्चमी के दिन ही बहनें अपने भाईयों को रक्षासूत्र बांध यह त्यौहार मनाते आ रहे हैं । हालांकि आजकल यह भी देखने में आ रहा है कि एक ही परिवार में दोनों ही दिन यह पर्व मनाया जाने लगा है जिसका मुख्य कारण अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्ध है । इस सम्बन्ध में यह भी बताना चाहूंगा कि परम्परागत रूप से भारत एवं नेपाल के हिन्दुओं में अन्तर्जातीय विवाह बहुत कम होते रहे हैं किन्तु अब शहरीकरण के चलते ज्यादा से ज्यादा युवा महिला और पुरुष जाति के बंधनों से परे अपनी व्यक्तिगत पसंद से शादी करना चाहते हैं और हमारे समाज से भी इसे अपेक्षाकृत अधिक स्वीकृति मिलने लग गयी है।

यह त्यौहार भाई और बहन का त्यौहार है / भाई बहन के प्यार का प्रतीक है। इन दोनों दिनों में बहनों में सभी की भी आंखे छलछला उठती हैं।

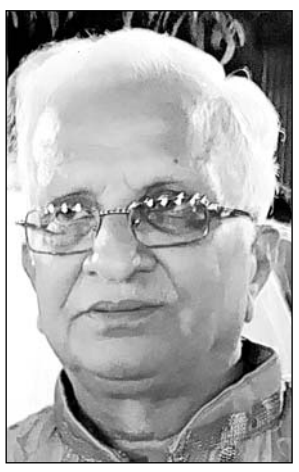

गोवेर्धन दास बिन्नानी राजा बाबू

एक अलग तरह का उमंग देखने में आता है जिसका एक मात्र कारण सुख-दु:ख में साथ निभाने की प्रतिबद्धता लेकिन आजकल सगी बहनों को उपहार चाहे नगद हो या अन्य किसी रूप में देकर, इतिश्री कर लेते हैं । जबकि आगे दोनों के बीच, भले ही मुंह-बोली बहन हो या मुंह-बोला भाई, एक निश्छल प्रेम देखने मिलता था । इसका एक छोटा सा उदाहरण आपको अवश्य ही आनंदित कर देगा जो इस प्रकार है -

जैसा सभी प्रबुद्ध पाठक जानते होंगे हिन्दी साहित्य युग के महानायक और उसकी आत्मा क्रमश: पं सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और उनकी मुंह-बोली बहन महादेवी वर्मा के बीच रक्षाबंधन वाले, एक दिन जो घटना पढ़ने में आती है उसके अनुसार निरालाजी रिक्शे में बैठ मुंह-बोली बहन महादेवीजी के यहां राखी बंधवाने के लिये पहुंचे, उससे ही बारह रुपये माँगते हैं और तो और महादेवीजी के यह पूँछने पर कि 12 रुपये काहे चाहिए तो मुंह-बोला भाई उत्तर देता है - दुई रुपैया इस रिक्शे वाले को और 10 तुमको राखी बधाई का दूँगा । ऐसी निश्छल प्रेम वाली घटना पढ़ हम सभी की भी आंखे छलछला उठती हैं।

श्रावण पूर्णिमा के दिन राखी बांधकर बहन अपने भाई से स्वयं की रक्षा करते रहने की प्रार्थना करती है जबकि ऋषि पञ्चमी के दिन बहन उपवास कर भाई को राखी बांधकर भगवान से हमेशा अपने भाई की कुशल-मंगल की कामना करती है । जबकि आजकी बदली हुयी परिस्थिति में दोनों ही पर्व पर बहन-भाई दोनों को एक दूसरे की रक्षा का केवल संकल्प की आवश्यकता है जैसा रक्षाबंधन का शाब्दिक अर्थ 'सुरक्षा का बंधन' स्पष्टतौर पर इस ओर इंगित करता है ।

आखिर निष्कर्ष में यही सत्य प्रतीत होता है कि दोनों ही पर्व बहन-भाई के रिश्तों की मधुरता को दर्शाता है । भारतीय परम्पराओं ऐसे पर्वों से सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती मिलती है। दोनों का अपना-अपना अस्तित्व ही नहीं है बल्कि पौराणिक एवं सामाजिक महत्व है और हमें दोनों के महत्त्व को समझकर उसका सम्मान करना चाहिए.. न की अपने अपने सुविधा अनुसार धर्म की रीति को बदलना उचित है...

गोवेर्धन दास बिन्नानी
राजा बाबू

आवारा पशुओं की शरण स्थली बना अस्पताल

नारायणपुर, (निसं)। उद्योग एवं देवस्थान मंत्री शकुंतला रावत की मौजूदगी में 19 अगस्त को हुई मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी (एमआरएस) की मिटिंग में मंत्री द्वारा मरीजों के लिए अस्पताल में सुविधाओं को लेकर बड़े-बड़े दावे किये जा रहे थे लेकिन मंत्री के ये सब दावे खोखले साबित हो रहे हैं।

- **मरीज वार्ड में रखे कचरा पात्र में सूअर मुंह मारता नजर आया**
- **रात्रि को मरीजों की सुरक्षा के लिए कोई गार्ड भी नहीं हैं**

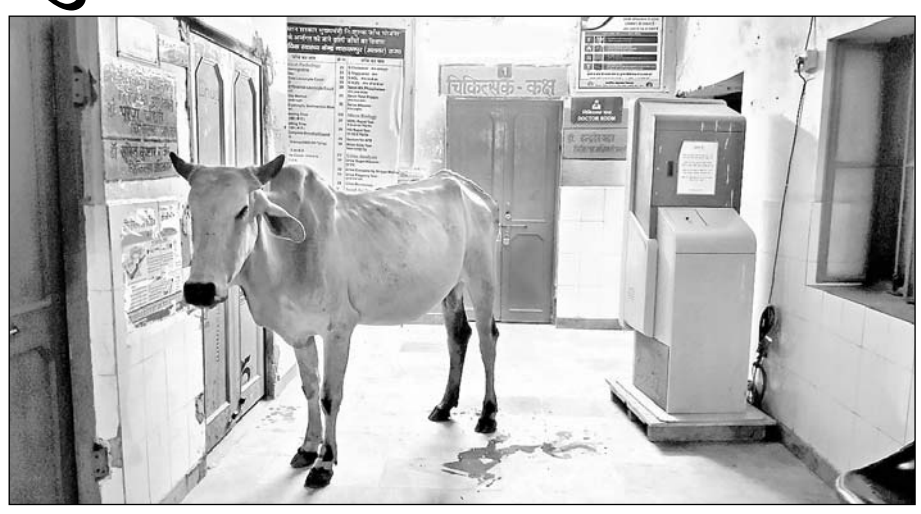

नारायणपुर अस्पताल परिसर में चिकित्सक कक्ष के सामने खड़ी गाय ।

कस्बे का सरकारी अस्पताल इन दिनों आवारा पशुओं की शरण स्थली बना हुआ है। अस्पताल में सुविधाओं के नाम पर केवल ढर्रा चल रहा है। ऐसा ही नजारा गत रात्रि को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) अस्पताल में देखने को मिला। जहां पर सरकारी अस्पताल के अंदर आवारा गाय व मरीज वार्ड में रखे कचरा पात्र में सूअर मुंह मारता नजर आया। इससे कस्बे की सरकारी अस्पताल की सुविधा व सुरक्षा की पोल खोल के रख दी है। वहीं ग्रामीणों ने बताया कि अस्पताल में रात्रि को न तो मरीजों के लिए कोई सुविधा है और ना ही यहां पर कोई सुरक्षा गार्ड है । इस ओर अस्पताल प्रबन्धन का भी कोई ध्यान नहीं है।

सीएचसी अधिकारी प्रभारी डॉ.सुरेश मीणा ने बताया कि अस्पताल के मैन गेट का निर्माण कार्य चल रहा है, कार्य पूरा होने पर गेट पर काऊ केचर लगा दिया जायेगा। जिससे आवारा पशुओं का आने-जाने का रास्ता बंद हो जायेगा।

गणेश चतुर्थी पर अब नहीं सुनाई देती डंकों की खनखनाहट

सांभरझील, (निसं)। भाद्र पक्ष की चतुर्थी को भगवान गणेश के जन्मोत्सव को मनाने की परम्परा में शनै: शनै: काफी परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है।

पीढ़ियों से जिस परम्परागत तरीके से गणेश चतुर्थी का पर्व मनाया जाता था वह पूरी तरह से लुप्तप्राय हो गयी है। अपनी यादों को साझा करते हुये यहां के स्वतंत्रता सेनानी रहे स्वर्गीय बिहारीलाल खोडवाल के पुत्र प्रोफेसर सुरेश चंद अग्रवाल ने बताया कि आजादी से पहले जब सरकारी स्कूल कम हुआ करते थे और पब्लिक स्कूलें भी नहीं थी, उस वक्त गणेश चतुर्थी के मौके पर पंडित जी बच्चों को साथ लेकर डंके खनखनाते हुये सभी के घर के जाते और परम्परागत गीत "चौक च्यानणी भादूडो-दे दे माई लाडूडों, आधौ लाडू भावै कोनी-सांपतो पांती आवै कोनी..." गीत गाते हुये जाने की पुरानी परम्परा प्रचलित रही है।

इस दिन बच्चों की मां पंडितजी के तिलक व आरती कर दक्षिणा व लड्डू प्रदान करती थी तथा बच्चे पैर छूकर उनसे आशीर्वाद लेते थे। इस तरह गणेश चतुर्थी पर बच्चे पंडितजी यानी गुरू के साथ गलियों व मौहल्लों में डंकों की खनखनाहट करते हुये उक्त गीत गाते चलते थे।

उस जमाने में गुड से बनायी जाने वाली गुडधाणी घरों में प्रमुखता से बनायी जाती थी।

गणेश चतुर्थी के मौके पर दाल-बाटी चूरमा आज भी घरों में मनाया जाता है तथा मुख्य द्वार पर भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा का श्रृंगार कर दीप प्रज्जवलन कर पूजा जरूर की जाती है, लेकिन डंकों की खनखनाहट अब सुनायी नहीं देती है।

परम्परागत गीत अब सुनायी नहीं देता है। वह गीत इस प्रकार से है सुण सुण ऐ गीगा की माय, थारौ गीगौ पढ़बा जाय ।

पढ़बा की पढ़ाई दै, छोरा नै मिठाई दै। आळो ढूंढ दिवाळो ढूंढ, बड़ी बहु की पैई ढूंढ, ढूंढ ढूंढाकर बारैआ, जोशी जी कै तिलक लगा, लाडूडा मै पान सुपारी, जोशी जी रै हुई दिवाळी। जौशण जी नै तिलियाँ दै,छोरा नै गुडधानी दै, ऊपर ठंडो पाणी दै। एक विद्या खोटी, दूजी पकडी चोटी। चोटी बोलै धम धम, विद्या आवै झम झम।

गणेश चतुर्थी पर काम आने वाले डंका दिखाता युवक।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 31 अगस्त, 2022

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, चित्रा नक्षत्र रात्रि 12:12 तक, शुक्ल योग रात्रि 10:47 तक, विष्टि करण रात्रि 11:30 तक, चन्द्रमा आज दिन 12:04 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग रात्रि 12:12 तक है। आज भद्रा दिन 3:23 तक है। शुक्र सिंह राशि में सांय 4:18 पर प्रवेश करेगा। आज महागणपति चतुर्थी (स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त) है। गणेश पजून का श्रेष्ठ समय मध्यान्ह काल (वृश्चिक लग्न) में श्रेष्ठ बताया गया है। आज दिन 11:11 से 1:43 तक जिसमें 11:58 से 1:43 तक वृश्चिक में पूजन का समय श्रेष्ठ रहेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:18 तक, शुभ 10:53 से 12:23 तक, चर 3:16 से 5:11 तक, लाभ 3:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:45

मेष
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी और नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में प्रगति होगी और अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे।

कुंभ
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। ावश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।